Dr. Preeti Ranjan
H.D. Jain College (Ara)

B.A Part - II

paper - 3

Topic - Kacchi ke Pallavan ka Rajnitik Itihas

महेन्द्रवर्मन प्रथम एवं नरसिंहवर्मन प्रथम के अन्तर्गत काञ्ची के पल्लवों के राजनीतिक इतिहास की एक रूपरेखा प्रस्तुत कीजिए ?

छठी सदी से आठवीं सदी तक प्रायद्वीप भारत के राजनीतिक इतिहास के आकर्षण का मुख्य केन्द्र कांची के पल्लव थे। कांची के पल्लव वंश के विषय में प्रामाणिक जानकारी हरिषेण की प्रयाग प्रशस्ति एवं ह्वेनसांग के यात्रा विवरण से मिलती है। सम्भवतः पल्लव लोग स्वतन्त्र राज्य स्थापित करने से पूर्व सातवाहनों के सामन्त थे। इनके प्रारम्भिक अभिलेख 'प्राकृत भाषा' में एवं बाद के 'संस्कृत' में मिले हैं।

इसके शासन के अन्तर्गत दो महत्वपूर्ण शासक रहे महेन्द्रवर्मन प्रथम तथा नरसिंहवर्मन प्रथम के काल दोनों का राजनीतिक इतिहास चालुक्यों की प्रतिद्वंद्विता के साथ उलझा रहा। सिंहविष्णु का पुत्र तथा उत्तराधिकारी महेन्द्रवर्मन प्रथम (600-630 ई०) हुआ। वह पल्लव वंश के महानतम शासकों में था। अपने पिता से प्राप्त छोटे से पल्लव राज्य को उसने अपनी कूटनीतिक क्षमता तथा सैन्य-शक्ति के बल पर एक शक्तिशाली साम्राज्य के रूप में प्रतिष्ठित किया। उसके शासन काल में पल्लव चालुक्य तथा पाड्य संघर्ष का वह दौर आरम्भ हुआ, जो अगले 175 वर्षों तक कायम रहा। पुलकेशिन तथा महेन्द्रवर्मन के बीच कड़ा संघर्ष हुआ। महेन्द्रवर्मन अपनी राजधानी को बचाने में सफल रहा लेकिन पल्लव राज्य के उत्तरी प्रान्तों पर पुलकेशिन का अधिकार हो गया। ~~यही से चालुक्य~~ कशाकुडिलेख में कहा गया है कि महेन्द्रवर्मन ने पुल्ललूर नामक स्थान पर अपने शत्रुओं को पराजित किया था।

उसके समय में पल्लव साम्राज्य न केवल राजनीतिक दृष्टि से बल्कि सांस्कृतिक, साहित्यिक एवं कलात्मक दृष्टि से भी अपने चरमोत्कर्ष पर था। वह स्वयं कवि और गायक था। उसने अनेक गुहामन्दिरों का निर्माण करवाया तथा 'मत्तविलासप्रहसन' की रचना की थी। उसके समय में निर्मित मन्दिर त्रिचनापल्ली, महेन्द्रवाड़ी तथा वल्लम में से वर्तमान हैं। वह एक संगीत प्रेमी था। उसके संरक्षण में ही संगीतशास्त्र पर आधारित ग्रंथ 'कुडुमियामलय' की रचना हुई।

उसने 'मत्तविलास' 'विचित्र चित्र' एवं 'गुणभर' आदि प्रशंसासूचक पदवी धारण की थी। नगर के समीप ही उसने एक झील का निर्माण करवाया था। महेन्द्रवर्मन प्रारम्भ में जैन था किन्तु बाद में वह शैव बन गया था।

उसने तत्कालीन साहित्यकारों को संरक्षण देने के साथ ही अपनी रचनाओं से भी साहित्य-सृजन को प्रोत्साहित किया। इसके साथ ही संस्कृत भाषा में अभिलेखों को उत्कीर्ण करवाया। इस प्रकार उसकी प्रतिभा बहुमुखी थी।

नरसिंहवर्मन प्रथम (630 ई०-68 ई०)

नरसिंहवर्मन प्रथम योग्य पिता का योग्य सन्तान था। उसने 630 ई० के लगभग महेन्द्रवर्मन प्रथम की मृत्यु के उपरान्त पल्लव राजगद्दी प्राप्त की। उसने साम्राज्य-विस्तार की नीति का अनुपालन करते हुए दक्षिण भारतीय राज्यों पर अपना प्रभुत्व स्थापित करके तत्कालीन बड़ी राज-शक्तियों से पल्लव साम्राज्य को अपराजेय बना दिया। उसके समय में पुलकेशिन द्वितीय ने पुनः पल्लव राज्य पर आक्रमण किया। 'कूरम दान पत्र' के अनुसार उसने चालुक्य नरेश पुलकेशिन द्वितीय को परिमल, मणिमंगलाई, एवं शूरमार के युद्धों में हराया। इसके साथ ही उसकी पीठ पर विजयाक्षर अंकित कर दिया। 642 ई० में चालुक्यों की राजधानी वातापी पर अधिकार कर लिया। इसी युद्ध में सम्भवतः पुलकेशिन II की मृत्यु हो गई, इस विजय उपलक्ष्य में नरसिंहवर्मन ने 'वातापीकोंड' की उपाधि ग्रहण की। (कूरम अभिलेख से इसकी जानकारी)

इसके बाद ही पल्लवों ने चालुक्य-राज्य के दक्षिणी भाग पर अधिकार कर लिया। नरसिंहवर्मन ने चालुक्यों की शक्ति को दुर्बल करके मैसूर तक अपने राज्य का विस्तार किया। नरसिंहवर्मन ने चोल, चेर और पाण्ड्य शासकों को पराजित किया और दक्षिण की ओर अपने राज्य का विस्तार किया। चालुक्यों के साथ युद्ध में लंका के ~~सिंहासन~~ पर राजकुमार मानवर्मा ने पल्लवों की सहायता की थी। अतः नरसिंहवर्मन ने मानवर्मा को राजगद्दी प्राप्त करने में सहायता की। इसकी दूसरी महत्वपूर्ण उपलब्धि थी।

असाधारण शौर्य एवं पराक्रम के कारण उसे 'महामल्ल' भी कहा गया। लेकिन 665 ई० में चालुक्य राजा विक्रमादित्य ने नरसिंहवर्मन को पराजित कर चालुक्यों के खोये हुए प्रदेशों पर अधिकार कर लिया। फिर भी नरसिंहवर्मन के समय में पल्लवों की शक्ति और प्रतिष्ठा में काफी वृद्धि हुई और एक विस्तृत साम्राज्य का निर्माण करवाया।

नरसिंहवर्मन् एक महान निर्माता भी था। महाबलीपुरम् के कुछ प्रकाशक रथों का निर्माण उसके काल में हुआ। महाबलीपुरम् उसके राज्य का सर्वप्रमुख बन्दरगाह भी था। उसके समय में कला व व्यापार की बहुत उन्नति हुई। उसने त्रिचनापल्ली में भी अनेक मन्दिर बनवाये थे। द्राविड़ वास्तुकला के क्षेत्र में नूतन स्तम्भ एवं रचना एवं अलंकरणात्मक अंकनों में नई शैली के उन्नायक के रूप में वह कालजयी है। ह्वेनसांग ने नरसिंहवर्मन् प्रथम के शासन काल में 'तोण्डमौण्डलम्' तथा राजधानी काञ्ची की यात्रा की थी। उसने वहाँ की समृद्धि मन्दिरों, बौद्धमठों, बिहारों तथा विद्यालयों आदि का विस्तार विशद् वृतान्त प्रस्तुत किया है। पल्लव साम्राज्य को पूर्ण विकसित एवं यशस्वी बनाकर उसने 668 ई० में दिव्यलोक की प्राप्ति की।

निष्कर्ष

अतः इस प्रकार हम कह सकते है कि ये दोनों शासक पल्लव वंश के सबसे शक्तिशाली शासक थे। इन्होंने अपनी शौर्य व साहस से चालुक्यों से युद्ध किया और कुछ हद तक सफलता भी प्राप्त की। उनकी यही सफलता उन्हें राजनीतिक और भी सफल कर रहे थे लेकिन इनके साथ ही उन्होंने सांस्कृतिक क्षेत्र में भी सफल योगदान दिया। जो आज भी इतिहास के पन्नों पर मौजूद है।